International Journal of Humanities, Social Sciences and Literary Research
(An International Peer-Reviewed (Refereed) Journal)
Website: www.ijhslr.org/
E-mail: editorinchief@ijhslr.org
ISSN (Online): 3139-3225

मध्यप्रदेश में विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों का प्रति व्यक्ति आय पर प्रभाव का विश्लेषण

डॉ . नमिता जैन[1] & डॉ.रूपाली शेवलकर[2]

[1] सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र),
पंडित दीनदयाल उपाध्याय कन्या महाविद्यालय संत हिरदाराम नगर, भोपाल
[2]सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र),
क्षेत्रीय नियोजन एवं आर्थिक विकास विभाग, बरकातुल्लाह विश्विद्यालय, भोपाल
Corresponding author: njain6899@gmail.com

Received: 07 July 2026, Revised: 27 July 2026, Accepted: 31 July 2026, Available Online: 22 August 2026

https://doi.org/10.5281/zenodo.22059912

शोध सारांश

मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि, उद्योग तथा सेवा क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रस्तुत शोध-पत्र में इन तीनों प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों के विकास तथा मध्यप्रदेश की प्रति व्यक्ति आय के बीच संबंध का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्य प्रदेश से वर्ष 2011-12 से वर्ष 2018-19 का सकल राज्य मूल्यवर्धन (2011-12) स्थिर भावो पर लिया गया **तथा** मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रकाशित आधिकारिक आँकड़ों का उपयोग किया गया है।अध्ययन से पता चलता है कि मध्यप्रदेश की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के लिए कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों का संतुलित एवं परस्पर योगदान आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है।

मुख्य शब्द: मध्यप्रदेश, प्रति व्यक्ति आय, कृषि, उद्योग, सेवा क्षेत्र, GSVA, आर्थिक विकास।

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास का विश्लेषण किया है। जिसके अंतर्गत हमने अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों को लिया है,जिसके कारण आर्थिक विकास संभव हो। इसमें हमने प्राथमिक द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र का अध्ययन किया है। मध्यप्रदेश में इन क्षेत्रों का प्रति व्यक्ति आय पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। प्रति व्यक्ति आय किसी राज्य की औसत आर्थिक स्थिति को समझने का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।यह राज्य की कुल आय और जनसंख्या के बीच संबंध को दर्शाती है। मध्यप्रदेश जैसे बड़े और विविधतापूर्ण राज्य में प्रति व्यक्ति आय का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ कृषि, उद्योग और सेवाओं की आर्थिक संरचना एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। मध्यप्रदेश में कृषि एवं संबद्ध गतिविधियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार हैं। दूसरी ओर उद्योग, विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र रोजगार तथा उत्पादन को बढ़ाते हैं। व्यापार, परिवहन, बैंकिंग, पर्यटन, शिक्षा, स्वास्थ्य और IT जैसी सेवाएँ राज्य की अर्थव्यवस्था को और अधिक विविध बनाती हैं।

शोध के उद्देश्य

- मध्यप्रदेश की आर्थिक संरचना का अध्ययन करना।
- कृषि एवं प्राथमिक क्षेत्र के योगदान का विश्लेषण करना।
- औद्योगिक क्षेत्र के प्रति व्यक्ति आय पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- सेवा क्षेत्र की भूमिका को समझना।
- क्षेत्रवार GSVA और प्रति व्यक्ति आय के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
- प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के लिए सुझाव देना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। मुख्य स्रोत आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्य प्रदेश से वर्ष 2011-12 से वर्ष 2018-19 का सकल राज्य मूल्यवर्धन (2011-12) स्थिर भावो पर लिया गया। इसमें GSDP, GSVA, प्रति व्यक्ति आय तथा प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों से संबंधित आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास का विश्लेषण किया है। जिसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के प्राथमिक , द्वितीयक एवं क्षेत्रों के सकल मूल्यवर्धन का प्रति व्यक्ति आय पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया। जिसका मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास पर व्यापक प्रभाव पड़ता हैं।

प्राथमिक क्षेत्र - मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। यहां आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि है। यहां की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग कृषि कार्य में लगा हुआ है। फिर भी मध्य प्रदेश कृषि क्षेत्र में अन्य राज्यों से पीछे है

, इसका प्रमुख कारण कृषि के मौसम पर अत्यधिक निर्भरता ,आधुनिक कृषि यंत्रों का अभाव और विकसित तकनीक तथा अशिक्षा है। इसके लिए मध्यप्रदेश में कृषि के पर्याप्त विस्तार की आवश्यकता है तथा लोगों को आधुनिक तकनीक से कृषि कार्य कराने के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि संभव हो सके। मध्यप्रदेश का सोयाबीन, चना, अलसी, दलहन, ज्वार, अमरूद, टमाटर, लहसुन के उत्पादन में प्रथम स्थान है। गेहूं मसूर आंवला संतरा मटर एवं धनिया के उत्पादन में द्वितीय स्थान है।(स्रोत मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड) इस प्रकार राज्य के आर्थिक विकास में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है। मध्यप्रदेश में गेहूं सर्वाधिक उत्पादित किया जाने वाला अनाज है। मध्य प्रदेश सोयाबीन उत्पादन में देश में प्रथम स्थान रखता है, इस वजह से प्रदेश को 'सोया प्रदेश' के नाम से जाना जाता है। एशिया में सोयाबीन का सबसे बड़ा कारखाना उज्जैन में है।

द्वितीयक क्षेत्र-इसी प्रकार किसी राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए औद्योगिकरण की बहुत आवश्यकता है। राज्य की अर्थव्यवस्था को विकास के उच्च स्तर पर लाने के लिए अर्थव्यवस्था का विविधीकरण भी आवश्यक है। औद्योगीकरण से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि संभव है, तथा कृषि पर निर्भरता भी कम होगी तथा राज्य की आर्थिक प्रगति के लिए औद्योगिकरण बहुत आवश्यक है। मध्यप्रदेश देश में सबसे तेजी से विकसित होने वाला राज्य है। मध्यप्रदेश राज्य प्राकृतिक साधनों जैसे ईंधन, खनिज, कृषि और जैव विविधता में समृद्ध राज्य हैं। देश में कोयला भंडार में मध्यप्रदेश का हिस्सा 8.30 प्रतिशत है। यहां चूना पत्थर ,मैगनीज और डोलोमाइट हीरा तथा तांबे के पर्याप्त भंडार है। मध्यप्रदेश में सभी प्रकार के उद्योग हैं- ऑटोमोबाइल, दवा ,सॉफ्टवेयर, खुदरा व्यापार, वस्त्र उद्योग तथा रियल स्टेट। मध्यप्रदेश में कई विशेष आर्थिक क्षेत्र है,जो मध्यप्रदेश के निर्यात तथा आर्थिक विकास को मजबूती प्रदान करते हैं। यहां रियल स्टेट विगत वर्षों में बहुत तेजी से उभरा है। ऑटोमोबाइल उद्योग के क्षेत्र में पीथमपुर को 'डेट्राइट ऑफ इंडिया' के नाम से जाना जाता है। मध्य प्रदेश में मुख्यत: खनिज पदार्थों पर आधारित उद्योग एवं रेडीमेड उद्योग राज्य की आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

सेवा क्षेत्र-सेवा क्षेत्र अर्थव्यवस्था का वह क्षेत्र है, जिसमें उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान की जाती है। सेवा क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां सम्मिलित होती है। जैसे व्यापार ,होटल, रेस्तरां ,भंडारण, परिवहन तथा संचार ,वित्त, बीमा, रियल स्टेट ,सामाजिक एवं व्यक्तिगत सेवाएं आदि। वर्तमान में सेवा क्षेत्र में बहुत से रोजगार का सृजन हो रहा है तथा आर्थिक विकास में सेवा क्षेत्र की भी बहुत बड़ी हिस्सेदारी है जैसे होटल, रेस्तरां पर्यटन रेलवे आदि सेवाओं से राज्य के सकल मूल्य वर्धन में वृद्धि हो रही है।

मध्यप्रदेश का वृहत क्षेत्रवार सकल राज्य मूल्यवर्धन (GVA) में परिवर्तन का विश्लेषण

किसी भी राज्य के आर्थिक विकास का सूचक राज्य के घरेलू उत्पादन तथा प्रति व्यक्ति आय होता है तथा यह राज्य की सुदृढ़ अर्थव्यवस्था एवं विकासात्मक योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए एक सुदृढ़ आधार होता है। इस अध्याय में वर्ष 2011-12 से 2018-19 तक मध्य प्रदेश का जिलेवार अध्ययन किया है,तथा सभी जिलों की प्रति व्यक्ति आय एवं अर्थव्यवस्था में तीनों क्षेत्र प्राथमिक द्वितीयक तृतीयक क्षेत्र में सकल राज्य मूल्यवर्धन में विभिन्न क्षेत्र के योगदान में आए परिवर्तन का अध्ययन किया गया है।

तालिका 6.2.1(अ) मध्य प्रदेश का सकल राज्य मूल्यवर्धन (2011-12) स्थिर भावो पर

	सकल राज्य मूल्यवर्धन (लाख रु.)				सहभागिता प्रतिशत		
वर्ष	प्राथमिक क्षेत्र	द्वितीयक क्षेत्र	तृतीयक क्षेत्र	कुल	प्राथमिक क्षेत्र	द्वितीयक क्षेत्र	तृतीयक क्षेत्र
2011-12	10278426	8227199	11863234	30368859	33.85	27.09	39.06
2012-13	12689059	8119694	13011009	33819762	37.52	24.01	38.47
2013-14	12536014	8314095	13682614	34532723	36.30	24.08	39.62
2014-15	13190607	8752874	14420526	36364007	36.27	24.07	39.66
2015-16	13210945	10208185	15570721	38989851	33.88	26.18	39.94
2016-17	16450725	10573768	16723193	43747686	37.60	24.17	38.23
2017-18	16708703	11508952	17833951	46051606	36.28	24.99	38.73
2018-19	16884385	14072607	19528842	50485834	33.44	27.87	38.68

स्रोत:आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्य प्रदेश

6.2.1(अ) मध्य प्रदेश का सकल राज्य मूल्यवर्धन (2011-12) स्थिर भावो पर

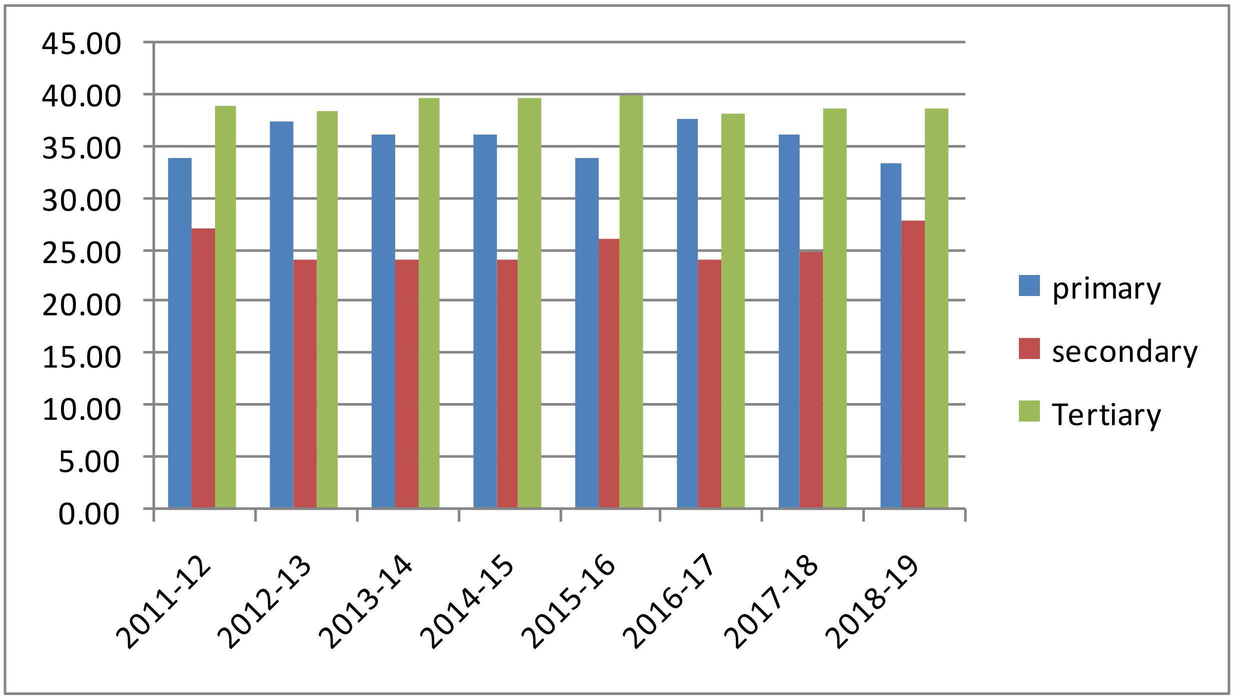

स्रोत:आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्य प्रदेश

सकल राज्य मूल्यवर्धन का वृहद क्षेत्रवार निष्पादन सारणी में दर्शाया गया है। सकल मूल्यवर्धन में प्राथमिक द्वितीयक तृतीयक क्षेत्र का अंश आधार वर्ष 2011-12 में क्रमश:33.85 , 27.09 एवं 39.06 प्रतिशत था ,जो बढ़कर वर्ष 2018-19 में 33.44, 27.87 एवं 38.68 प्रतिशत अंश था। वर्ष 2011-12 से 2018-19 के वर्षों में क्षेत्रवार सकल राज्य मूल्यवर्धन में सहभागिता की दर में ज्यादा परिवर्तन परिलक्षित नहीं हुआ।

तालिका 6.2.1(ब) मध्य प्रदेश के सकल राज्य मूल्यवर्धन में विभिन्न क्षेत्रों की वृद्धि दर (वर्ष 2011-12 से वर्ष 2018-19)

वर्ष	**प्राथमिक क्षेत्र**	**द्वितीयक क्षेत्र**	**तृतीयक क्षेत्र**
2011-12			
2012-13	23.45	-1.31	9.68
2013-14	-1.21	2.39	5.16
2014-15	5.22	5.28	5.39

2015-16	0.15	16.63	7.98
2016-17	24.52	3.58	7.40
2017-18	1.57	8.84	6.64
2018-19	1.05	22.28	9.50

स्रोत:-आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय,मध्य प्रदेश

तालिका में वर्ष 2011-12 के स्थिर भावो के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों की वृद्धि दर ज्ञात की गई।वर्ष 2012-13 में प्राथमिक क्षेत्र में 23.45 प्रतिशत वृद्धि हुई।द्वितीयक क्षेत्र में-1.31 प्रतिशत कमी हुई, तथा तृतीयक क्षेत्र में 9.68 प्रतिशत वृद्धि हुई। इस प्रकार 2018-19 के आंकड़ों के आधार पर प्राथमिक क्षेत्र में 1.05 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में क्रमशः 22.28 तथा 9.50 प्रतिशत वृद्धि हुई इस प्रकार तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मध्यप्रदेश में प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भरता कम हो रही है तथा द्वितीय एवं तृतीयक क्षेत्र का ज्यादा विकास हो रहा है तथा इन क्षेत्रों में रोजगार के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

मध्यप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय में (2011-12 से 2018-19) परिवर्तन का विश्लेषण

प्रति व्यक्ति आय किसी भी राज्य के आर्थिक विकास का सूचक होता है।प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होना वहां की आर्थिक समृद्धि का सूचक है तथा प्रति व्यक्ति आय में कमी होना,उस राज्य के आर्थिक विकास में कमी का घोतक है। प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि का तात्पर्य उस राज्य में पर्याप्त रोजगार के साधन है तथा वहां उत्पादकता में वृद्धि हो रही है।

मध्यप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय में(वर्ष 2011-12 से वर्ष 2018-19) वृद्धि दर

वर्ष	**प्रति व्यक्ति आय**	**वृद्धि दर**
2011-12	38497	_
2012-13	41142	6.87
2013-14	42548	3.42
2014-15	44027	3.48
2015-16	47351	7.55
2016-17	52782	11.47
2017-18	54824	3.87
2018-19	59000	7.62

स्रोत:-आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्य प्रदेश

तालिका में मध्यप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2011-12 से 2018-19 तक को दर्शाया गया है। तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है, कि मध्य प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय में इन वर्षों में वृद्धि हुई है। वर्ष 2011-12 में

मध्य प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय 38497 थी जो 2014-15 में 44027 रुपए हुई। एवं 2018-19 में 59000रू. हो गई। प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि दर का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि, मध्य प्रदेश में 2012-13 में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि दर 6.87% तथा 2015-16 में 7.5% थी। सर्वाधिक वृद्धि दर 2016-17 में 11.47 थी। वर्ष 2018-19 में 7.62 प्रतिशत प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि दर रही।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में मध्य प्रदेश में राज्य के घरेलू उत्पाद एवं प्रति व्यक्ति आय का अध्ययन किया गया। जिससे ज्ञात होता है, कि मध्य प्रदेश में आर्थिक विकास की तीव्र गति से हो रहा है तथा सकल मूल्य वर्धन का क्षेत्रवार विश्लेषण से ज्ञात होता है कि वर्ष 2011-12 से वर्ष 2018-19 में ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ। मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र का बहुत योगदान है। पिछले दो दशकों में कृषि क्षेत्र में जबरदस्त वृद्धि हुई है। मध्य प्रदेश सरकार ने कृषि विकास के लिए कई नीतिगत पहल की है। सिंचाई, बिजली, सड़क, वित्त पोषण, और खाद खरीद के परिणाम स्वरुप के कृषि के विस्तार में मदद मिली है। मध्य प्रदेश की जलवायु एवं मिट्टी के प्रकार भी कृषि क्षेत्र में की उन्नति में सहायक है ।मध्य प्रदेश सरकार में सात बार कृषि कर्मण पुरस्कार जीता है। सरकार द्वारा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है तथा सरकार किसानों के समर्थन मूल्य पर गेहूं धान और मोटे अनाज की खरीदी करती है, जिससे कृषकों को कृषि के विस्तार हेतु प्रोत्साहन मिलता है। इसी प्रकार मध्य प्रदेश में बागवानी, दूध, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन क्षेत्र का भी विस्तार हो रहा है। मध्य प्रदेश खनिज संसाधनों में भी समृद्ध है भारत में खनिज उत्पादन में मध्य प्रदेश चौथे स्थान पर है। राज्य में सीमेंट ,इस्पात, खाद्य प्रसंस्करण, कपड़ा ,ऑटोमोबाइल ,फार्मा ,ऑप्टिकल फाइबर जैसे उद्योगों के लिए मजबूती प्रदान करता है। राज्य के निवेशकों को आकर्षित करने के लिए मध्यप्रदेश संसाधनों से समृद्ध राज्य है। मध्य प्रदेश की सरकार की व्यवसायिक नीतियां निवेशकों को निवेश करने में प्रोत्साहित करती है। मध्यप्रदेश में संसाधनों और निवेश के अवसरों के बारे में निवेशकों को जागरूक करने के लिए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का समय-समय पर आयोजन किया जाता है। किसी भी राज्य के आर्थिक विकास के लिए इस प्रकार के आयोजनों की बहुत आवश्यकता है। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा औद्योगिकरण को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न नीतियां क्रियान्वित की जा रही हैं।

मध्य प्रदेश में सेवा क्षेत्र का भी पर्याप्त विस्तार हो रहा है मध्य प्रदेश में पर्यटन की प्रचुर संभावनाएं हैं यहां प्रमुख पर्यटक आकर्षण संरक्षित वन क्षेत्र, वन्य जीवन, ऐतिहासिक इमारतें, किले, महल, मंदिर और धार्मिक महत्व के स्थान है। मध्य प्रदेश में खजुराहो भीमबेटका की गुफाएं सांची यह तीनों यूनेस्को की विश्व धरोहर में शामिल है एवं मध्यप्रदेश में बहुत से पर्यटन स्थलों का विस्तार किया जा रहा है। यहां प्राथमिक क्षेत्र के साथ-साथ द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है। जो कि तीव्र आर्थिक विकास का सूचक है।

मध्य प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय का जिलेवार अध्ययन

मध्य प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय का अध्ययन जिलेवार किया गया है। इसके अंतर्गत वर्ष 2016-17 में मध्य प्रदेश के 52 जिलों की प्रति व्यक्ति आय को लिया गया है। चतुर्थक विचलन विधि द्वारा इन 52 जिलों को प्रति व्यक्ति आय के आधार पर चार श्रेणियां में विभक्त किया गया है।

मध्य प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय का जिलेवार विश्लेषण (वर्ष 2016-17)

श्रेणी-1	**प्रति व्यक्ति आय**	**श्रेणी-2**	**प्रति व्यक्ति आय**	**श्रेणी-3**	**प्रति व्यक्ति आय**	**श्रेणी-4**	**प्रति व्यक्ति आय**
इंदौर	85060	नीमच	61986	खरगोन	47152	शिवपुरी	42313
भोपाल	82634	शहडोल	60353	सीहोर	47128	टीकमगढ़	41001
जबलपुर	73819	हरदा	58621	सतना	46977	रीवा	39638
देवास	69681	कटनी	57613	राजगढ़	46706	पन्ना	39008
होशंगाबाद	69508	सागर	57410	दमोह	46599	मुरैना	38006
उज्जैन	69231	नरसिंहपुर	54723	उमरिया	45860	बालाघाट	37863
बुरहानपुर	68912	रायसेन	54446	गुना	45150	झाबुआ	36260
शाजापुर	68464	मंदसौर	54274	बैतूल	43791	मंडला	35426
छिंदवाड़ा	66324	खंडवा	53057	सिवनी	43635	भिंड	34371
रतलाम	65505	दतिया	49487	श्योपुर	43442	बड़वानी	32990
ग्वालियर	64417	धार	47993	छतरपुर	43376	सीधी	30958
सिंगरौली	62211	अनूपपुर	47838	अशोक नगर	42637	डिंडोरी	27316
		विदिशा	47657			अलीराजपुर	27151

स्रोत:-आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्य प्रदेश

मानचित्र में मध्य प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय का जिलेवार विश्लेषण (वर्ष 2016-17)

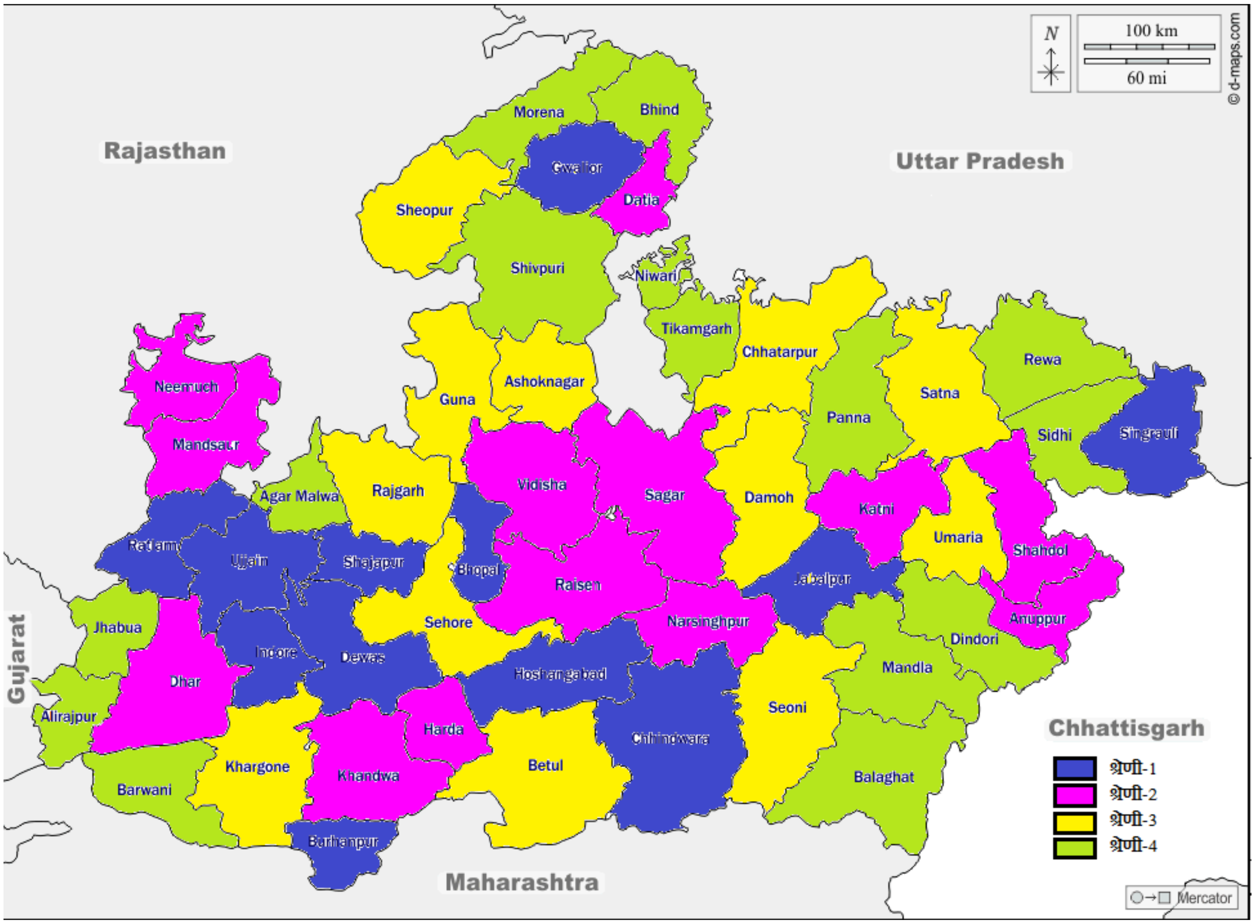

उपर्युक्त तालिका एवं मानचित्र में मध्य प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय का जिलेवार विश्लेषण (वर्ष 2016-17)किया गया है जिसे चतुर्थक विचलन रीति द्वारा इन्हें चार श्रेणियां में विभक्त किया गया है।

श्रेणी-1 इस श्रेणी में मध्य प्रदेश के सर्वाधिक प्रति व्यक्ति आय वाले जिले हैं जो क्रमशः इंदौर भोपाल जबलपुर देवास होशंगाबाद उज्जैन बुरहानपुर शाजापुर छिंदवाड़ा रतलाम ग्वालियर सिंगरौली है। यहां प्रति व्यक्ति आय अन्य जिलों की अपेक्षा ज्यादा है। इंदौर में सबसे ज्यादा प्रति व्यक्ति आय है, क्योंकि इंदौर जिला व्यावसायिक दृष्टि से बहुत ही विकसित जिला है। इंदौर भोपाल उज्जैन जबलपुर इन जिलों में बड़े मध्य एवं छोटे पैमाने के भी विनिर्माण एवं सेवा उद्योग है, जिनके द्वारा यहां व्यापार होता है तथा लोगों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। यहां पर कृषि के साथ-साथ उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का भी पर्याप्त विस्तार है। छिंदवाड़ा जैसे जिलों में खनन उद्योग आदि बहुत विकसित है, जिससे लोगों को पर्याप्त रोजगार मिल रहा है तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो रही है। इन जिलों में सड़क और वायु परिवहन की भी पर्याप्त सुविधा है तथा अन्य राज्यों से इसकी संबंद्धता

अच्छी है जो यहां के व्यापार और व्यवसाय के विस्तार के लिए सहायक है,जो कि इन जिलों के आर्थिक विकास में विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

श्रेणी-2 इसके अंतर्गत नीमच ,शहडोल, हरदा, कटनी, सागर, नरसिंहपुर, रायसेन, मंदसौर खंडवा, दतिया, धार ,अनूपपुर, विदिशा जिले आते हैं। इन जिलों की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था है एवं कृषि कार्य में उन्नत तकनीकी एवं मशीनरी, उच्च किस्म के खाद एवं बीज आदि का उपयोग होता है, जिससे उत्पादन में वृद्धि हो रही है, और लोगों के आय में भी वृद्धि हो रही है। इन जिलों में मंदसौर जिला भारत का सबसे बड़ा अफीम उत्पादक जिला है तथा यहां के अफीम का विदेश में भी निर्यात किया जाता है। मंदसौर जिले के आसपास स्थित उद्योग है जो यहां की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करते हैं।यह उद्योग है- स्टार्च फैक्ट्री, इस्पात उद्योग, चीनी मिल, स्लेट पेंसिल उद्योग,कपास स्पिन फैक्ट्री ये सभी उद्योग लोगों की आय का प्रमुख स्रोत है इस कारण यहां प्रति व्यक्ति आय का स्तर ऊंचा है। विदिशा जिला खनिज भंडार में समृद्ध है तथा यहां पर्यटन उद्योग कभी काफी विस्तार है तथा कृषि व कृषि से संबंधित उद्योग संचालित है, जो यहां के लोगों की आय का प्रमुख साधन है इस प्रकार द्वितीय श्रेणी में ज्यादातर जिले कृषि पर आधारित जिले हैं तथा कुछ लघु और मध्यम उद्योगों के कारण यहां का आय का स्तर ऊंचा है।

श्रेणी-3 इसके अंतर्गत खरगोन, सीहोर,सतना, राजगढ़, दमोह, उमरिया, गुना, बैतूल, सिवनी , श्योपुर,छतरपुर एवं अशोक नगर जिले आते हैं। इन जिलों की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर निर्भर है।आजीविका कमाने के लिए इन जिलों के अधिकतर आबादी कृषि में लगी हुई है। जिले के किसानों के द्वारा नई कृषि प्रौद्योगिकी को अपनाने से विभिन्न कृषि वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाने में मदद मिलती है। इन जिलों में औद्योगीकरण बहुत कम है। यहां कृषि एवं वनोत्पाद आधारित लघु एवं मध्यम उद्योग है, जो यहां के लोगों की आय का साधन है। इस श्रेणी में कुछ जिलों को छोड़ कर बाकी जिले पिछड़े जिलों के अंतर्गत आते हैं तथा यहां आय का स्तर भी निम्न है।

श्रेणी-4 इसके अंतर्गत शिवपुरी, टीकमगढ़, रीवा, पन्ना, मुरैना, बालाघाट, झाबुआ, मंडला, भिंड, बड़वानी, सीधी, डिंडोरी, अलीराजपुर आदि जिले आते हैं। यह सभी जिले आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है ।आर्थिक रूप से बहुत ही पिछड़े जिले हैं तथा यहां आवागमन के साधन भी पर्याप्त नहीं है शिक्षा का स्तर भी यहां निम्न है।यहां वन क्षेत्र ज्यादा होने के कारण इन जिलों में वनोत्पाद पर आधारित तेंदूपत्ता, साल, सागौन आदि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यहां पर कृषि क्षेत्र पर निर्भरता ज्यादा है और यहां कृषि उत्पादन में वृद्धि दर बहुत कम है। कृषि उत्पादकता में कमी का कारण यह है, कि यहां कृषि कार्य परंपरागत तरीके से ही होता है नई कृषि तकनीक का लोगों में ज्ञान नहीं है एवं इन क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं जैसे- सूखा, बाढ़ आदि परिस्थितियों के कारण उत्पादन बहुत कम होता है। इस कारण यह जिले आर्थिक विकास की दृष्टि से पिछड़े हैं तथा यहां प्रति व्यक्ति आय का स्तर भी निम्न है। झाबुआ जैसे जिले में अत्यधिक सूखाग्रस्त और बंजर भूमि है। यह मध्य प्रदेश के आर्थिक रूप से सबसे पिछड़े जिले के अंतर्गत आता है और वर्तमान में पिछड़ा क्षेत्र अनुदान निधि कार्यक्रम से इस जिले को अनुदान प्राप्त हो रहा है। यहां की आर्थिक स्थिति बहुत ही निम्न है। डिंडोरी अलीराजपुर ये सभी जिले भी आर्थिक रूप से पिछड़े जिलों के अंतर्गत आते हैं। यहां पर लोग कृषि पर निर्भर है तथा यहां बड़े पैमाने में बेरोज़गारी व्याप्त है। यहां अनुसूचित जाति, जनजाति का प्रतिशत भी ज्यादा है तथा शिक्षा का स्तर भी निम्न है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत शोध पत्र में मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में परिवर्तन का विश्लेषण वर्ष 2011-12 से 2018-19 के आंकड़ों के आधार पर किया गया। सभी जिलों में प्रति व्यक्ति आय एवं अर्थव्यवस्था में तीनों क्षेत्र प्राथमिक द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में सकल मूल्यवर्धन का कितना प्रतिशत योगदान रहा उसका विश्लेषण किया गया इस आधार पर स्पष्ट होता है कि मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में प्राथमिक क्षेत्र में निर्भरता कम हो रही है जबकि द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र का ज्यादा विकास हो रहा है और इन क्षेत्रों में रोजगार के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

मध्यप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि राज्य के आर्थिक क्षेत्रों के विस्तार से जुड़ी हुई है। कृषि क्षेत्र राज्य की आर्थिक संरचना का आधार बना हुआ है, जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्र आर्थिक विविधीकरण को बढ़ावा दे रहे अतः मध्यप्रदेश की प्रति व्यक्ति आय को और बढ़ाने के लिए कृषि की उत्पादकता, औद्योगिक निवेश, कौशल विकास और सेवा क्षेत्र के विस्तार पर एक साथ ध्यान देना आवश्यक है कृषि उत्पादन में वृद्धि , उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध करा सकती है। उद्योगों के विकास से परिवहन, व्यापार और वित्तीय सेवाओं की मांग बढ़ सकती है। परिणामस्वरूप रोजगार और आय के अवसरों में वृद्धि हो सकती है।।

सुझाव :-

किसी राज्य की प्रति व्यक्ति आय केवल एक क्षेत्र की वृद्धि से निर्धारित नहीं होती। तीनों क्षेत्रों के बीच परस्पर संबंध महत्वपूर्ण है। इस शोध विश्लेषण के आधार पर सुझाव दिए गए हैं।

1.कृषि में आधुनिक तकनीक और सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाए।

2.कृषि उत्पादों के भंडारण एवं खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा दिया जाए।

3.MSME और स्थानीय उद्योगों को वित्तीय एवं तकनीकी सहायता दी जाए।

4.युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।

5.पर्यटन और IT सेवाओं को छोटे शहरों तक बढ़ाया जाए।

6.ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल और परिवहन सुविधाओं को मजबूत किया जाए।

7.महिलाओं की रोजगार एवं उद्यमिता में भागीदारी बढ़ाई जाए।

संदर्भ :-

1. W. Arthur Lewis - Economic Development with Unlimited Supplies of Labour (1954) – structural transformation from agriculture to industry and services.
2. Simon Kuznets - Economic Growth of Nations (1971) – economic growth, structural change and per capita income
3. Majumder, R. (2017) – Development of Infrastructure and its Impact on Economic Growth in Madhya Pradesh. (Journal of Madhya Pradesh Economic Association, Vol. XXVII)
4. Singh, J., & Pal, S. (2018) – Agricultural Growth Trajectory in Madhya Pradesh: Is It Sustainable? (International Journal of Social Science & Management Studies)
5. Gulati, A., Sharma, P., & Samantry, A. (2021) – Agricultural Growth, Diversification, and Inclusive Development in Madhya Pradesh.
6. आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्यप्रदेश।
7. मध्यप्रदेश जनसम्पर्क विभाग, आर्थिक एवं कृषि संबंधी सरकारी प्रकाशन।
8. मध्यप्रदेश शासन, कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र संबंधी आधिकारिक जानकारी।